International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 4; April 2017; Page No. 287-288

मानव जनसंख्या एवं पर्यावरण

संकेत मिठारवाल

भारतीय खाद्य निगम, भिवानी, हरियाणा, भारत।

सारांश
मानव जनसंख्या एवं पर्यावरण के मध्य घनिष्ठ कार्य कारण संबंध पाये जाते है। विश्व के विभिन्न भागों में मानव समुदायों ने अपने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन के द्वारा सांस्कृतिक प्रतिरूपों का निर्माण किया है। ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में आर्थिक एवं तकनीकी क्षमताओं में उत्तरोतर वृद्धि के फलस्वरूप मानव, प्राकृतिक प्रतिकुलताओं का बेहतर ढंग से सामना कर सकता है। परन्तु विश्व जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण प्रारूपों के विश्लेषण से स्वतः स्पष्ट है कि विश्व के जिन क्षेत्रों में प्राकृतिक अनुकुलताएँ है, उन्हीं क्षेत्रों में व्यापक सांस्कृतिक रूपांतरण एवं सघन जनसंख्या का बसाव हुआ है।

मूल शब्दः जनसंख्या, पर्यावरण।

प्रस्तावना
मानव स्वास्थय एवं पर्यावरण का गहरा सम्बंध है। जहाँ एक ओर विश्व के निर्धन/कम विकसित देशों में पोषण एवं स्वास्थय दशाओं को सुधारने की आवश्यकता है तीव्र गतिशीलता के कारण सिकुड़ती हुई दुनिया में पिछले कुछ वर्षों में इनफलुएंजा तथा दूसरी संक्रामक बीमारियों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रसरण देखा गया है। भारत में यद्यपि पिछले दो दशकों में जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आने से नई आशाओं का संचार हुआ है, परन्तु बड़े जनसंख्या आधार के दबाव एवं ढांचागत समस्याओं के के कारण आर्थिक विकास का असर बहुसंख्यक लोगों में उभर कर नहीं आ पाता और गहरी सामाजिक, आर्थिक विषमताओं का निर्माण करता है। भारत में नगरीकरण, स्वास्थय दशाओ तथा पर्यावरण एवं जीवन की गुणवता में सुधार की काफी संभावनाएँ है।
मानव जनसंख्या, पर्यावरण को न केवल आवास के रूप में उपभोग करती है अपितु अपने विभिन्न क्रियाकलापों से प्राकृतिक भू–दृश्यों का रूपांतरण करती है। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के घटक तत्व परस्पर अंतक्रिया द्वारा विश्व के विभिन्न क्षेत्रो में जनांकिकिय प्रतिरूपों का निर्माण करते है। जनसंख्या दबाव एवं पर्यावरण के अत्यधिक विदोहन से पर्यावरणीय व्यवस्थाएँ विरूपित हो जाती है और पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो जाते है।

जनसंख्या वृद्धि
जनसंख्या वृद्धि एक निरन्तर प्रक्रिया है। विश्व स्तर पर जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के पश्चात भी चिकित्सा सुविधाओं के प्रसार एवं मृत्युदरों में कमी के कारण अगले कुछ दशकों तक जनसंख्या वृद्धि दर ऊँची बने रहना संभावित है। विश्व जनसंख्या वृद्धि को कालक्रमानुसार तीन चरणों में विभाजित
क) 1650 ई.पूर्व
ख) 1650 ई. से 1950 ई. के मध्य
ग) 1950 ई. के पश्चात् जनसंख्या वृद्धि

क) 1650 ई. पूर्व
ईसा के समय कुल जनसंख्या 200–300 मिलियन के बीच रही होगी। 1500 ई. में विश्व की कुल जनसंख्या 530 मिलियन होगी तथा 1650 ई. तक बढ़कर 545 मिलियन हो गई।

ख) 1650 ई. से 1950 ई. के मध्य
कृषि, उद्योग, तकनीक विकास एंव चिकित्सा सुविधा से मृत्युदर में कमी, तीव्र जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण था। 1950 ई. तक जनसंख्या की तीव्र वृद्धि ने विश्व के अनेक क्षेत्रों में गंभीर समस्या का रूप धारण कर लिया।

ग) 1950 ई. के पश्चात जनसंख्या वृद्धि
जनसंख्या की यह अप्रकाशित वृद्धि चिकित्सा क्रांति के कारण हुई है। जनसंख्या वृद्धि का दूसरा कारण किन्ही क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता व अकाल को छोड़कर अभूतपूर्व आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा का वातावरण है। प्रतिवर्ष विश्व जनसंख्या में लगभग 90 मिलियन की वृद्धि हो रही है। समस्त प्रयासों के उपरांत भी विश्व जनसंख्या में कम से कम 2050 तक वृद्धि होती रहेगी।

जनसंख्या वृद्धि के कारण
- गहन कृषि तथा यांत्रिक कृषि के द्वारा खाद्यानों के उत्पादन में वृद्धि हुई। इससे खाद्य आपूर्त्ति अधिक निश्चित हो गई।
- विज्ञान व तकनीकी प्रगति से जीवन को सरल, सुखी, सम्पन्न बनाने के प्रचुर साधन प्राप्त हुए।
- स्वास्थय एवं चिकित्सा विज्ञान की उन्नति के द्वारा बीमारियों पर नियंत्रण एवं जीवन प्रकाश वृद्धि होने से मृत्यु दर कम हो गई।
- औद्योगिकरण के द्वारा जटिल अर्थतंत्रों की विकास हुआ जिससे खनन, विनिर्माण, परिवहन, वाणिज्य तथा प्रबंधन के क्षेत्र मे नित नए रोजगार बढ़ती जनसंख्या को मिलते रहे।
- नए बसे हुए क्षेत्रों जैसे उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथ्ज्ञा न्यूजीलैण्ड मानव आप्रवास के कारण जनसंख्या बढ़ी क्योंकि यूरोप तथा एशिया के सघन क्षेत्रों से मनुष्य इन क्षेत्रों में आकर बसते रहे।

जनसंख्या वितरण
संपूर्ण जनसंख्या का 50 प्रतिशत जहाँ केवल 5 प्रतिशत से कम स्थल भाग में केन्द्रित है। वहीं 50 प्रतिशत स्थल भाग में मात्र 5 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। विश्व की 80 प्रतिशत जनसंख्या उत्तरी महाद्वीपों में तथा शेष 20 प्रतिशत जनसंख्या तीन दक्षिणी महाद्वीपों में निवास करती है।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

1. स्थिति

स्थिति का प्रभाव किसी प्रदेश की जलवायु, कृषिगत उद्यानों, परिवहन, व्यापारिक गम्यता एवं आर्थिक विकास पर सबसे अधिक पड़ता है।

2. जलवायु

विश्व के घने वाले क्षेत्र मानसूनी तथा समशीतोष्ण जलवायु प्रदेश है। मानसून एशियाई देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोपीय देशों में अनुकूल जलवायु के कारण ही सद्यन जनसंख्या पाई जाती है।

3. धरातल

समतल मैदानी क्षेत्रों में विश्व जनसंख्या के प्रमुख जमघट मिलते है क्योंकि इन क्षेत्रों में कृषि हेतु अनुकूल मिट्टी, सिंचाई, परिवहन, औद्योगिक विकास एवं व्यापार की सुविधा होती है।

4. मिट्टी

उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों में सद्यन जनसंख्या मिलती है। दोमट एवं कांप मिट्टीयाँ कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। इन मिट्टीयों में अपेक्षाकृत अधिक फसल उत्पादन होता है। जिसके द्वारा अधिक जनसंख्या का भरण–पोषण संभव होता है।

5. जलापूर्त्ति

जल मानव जीवन का अभिन्न अंग है क्योंकि यह घरेलू कार्य, सिंचाई, परिवहन, उद्योग आदि से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्त्ति करता है। विश्व के अधिकांश बड़े नगर नदियों तथा जलापुर्त्ति के अन्य स्त्रोतों के सन्निकर की स्थिति है।

6. वन, खनिज तथा शक्ति संसाधन

वन संपदा तथा खनिज संसाधन जो मानव के आर्थिक विकास के लिए अत्यंत उपयेागी है जनसंख्या को आकर्षित करते है विषम प्राकृतिक वातावरण में भी मानव उपर्युक्त संसाधन के स्त्रोतों के निकट बस जाता है। उच्च अक्षांशो तथा पर्वतीय भागों में इमारती लकड़ी वाले वनों के निकट भी जनसंख्या बसी हुई है।

नगरीय परिस्थितिकी

उच्च जनसंख्या घनत्व, आर्थिक समूहन से प्राप्त लाभों के कारण नगरीकरण का निरन्तर प्रसार हो रहा है। जहाँ एक ओर इसका रोजगार, उत्पादन, आय एवं बाजार पर सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

- दूसरी ओर नगरीकरण से आवास की कमी, अपर्याप्त जलापुर्त्ति, गंदगी एंव अपशिष्ट निस्तारण, भीड़–भाड़, यातायात अवरूद्धता, वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण तथा सामाजिक असुरक्षा आदि कई समस्याएं भी सामने आ रही है।
- नगरीय पर्यावरण की गुणवता मे कुल मिलाकर निरंतर हनन हो रहा है। बड़े शहर संतृप्त बिन्दू तक पहुंच गए है। और उनका आधारभूत ढांचा लगातार बढ़ते जनसंख्या दबाव का सामना नहीं कर पा रहा।
- नगरों को ''आर्थिक वृद्धि का इंजन'' माना जाता है क्योंकि ये राष्ट्रीय आय में औसतन 60 प्रतिशत का योगदान करते है। परन्तु पर्यावरणीय दृष्टि से वे आंतरिक तौर पर अनुपयुक्त है।
- अतः नगरीय पारिस्थितिकी की सुरक्षा हेतु औद्योगिक ढांचे के पुननिर्माण तथा नवीन तकनीकी विकास की आवश्यकता है। नगरीकरण की प्रक्रिया इस प्रकार व्यवस्थित की जानी चाहिए जिसमें नगरीय क्षेत्रों को प्रदूषण मुक्त एवं पर्यावरणीय अनुकुल क्षेत्रों के रूप में विकसित किया जाए।

पर्यावरण एवं मानवीय स्वास्थय–

नगरीकरण एंव औद्योगीकरण द्वारा आर्थिक समृद्धता की अपेक्षा की जाती है, परन्तु साथ ही भीड़–भाड़ तथ दूषित पेयजल के कारण संक्रामक अतिसार एवं विषाणु जनित क्षय रोग का प्रसार हो रहा है। उच्च घनत्व वाले नगरीय यातायात के कारण दमा जैसे श्वसन रोगों का प्रसार हो रहा है।

- कृषि ने कीटनाशकों के प्रयोग से जहाँ हरित क्राँति के दौरान उत्पादनों में आशातीत वृद्धि हुई वहीं ये खेतों में कार्य करने वाले तथ्ज्ञा कृषिगत उत्पादनों का उपभोग करने वाले लोगों के स्वास्थय को गंभीर क्षति पहुंचा रहे है। सुरक्षा उपायों की अनदेखी के कारण कई मिलियन घरों तथा कार्य स्थलों पर हानिकारक रसायनों के सम्पर्क में आ जाते है जो उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते है।
- आर्थिक विषमता, स्वास्थ्य दशाओं पर गहरा प्रभाव डालती है। निम्न आये वाले देशों में 36 प्रतिशत बच्चे तथा मध्यम आय वाले देशों में 12 प्रतिशत बच्चे कुपोषण से ग्रसत पाये जाते है।

इस प्रकार आर्थिक विकास के कारण कई दीर्घ कालिक स्वास्थय समस्याएं भी उत्पन्न हो गई है। जहां बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के कारण जीवन प्रत्यासा में वृद्धि, महामारियों की रोकथाम तथा शिशु मृत्यु दरों में कमी आई है। वहीं इससे अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि भी हुई है। जिसका पर्यावरण की गुणवता पर नकरात्मक प्रभाव पड़ रहा है। समाज का बेहतर स्वास्थ्य स्तर, बेहतर जीवन दशाओं तथा स्थिर जनसंख्या वृद्धि द्वारा ही संभव है।

भारतीय परिदृश्य

भारतीय नगरीकरण निर्वाहक स्तर का है तथा कुछ औद्योगिक केन्द्रो को छोड़कर इनमें तृतीयक व्यवसायों (सेवा) की प्रधानता है। भारत में नगरीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्याएं निम्न प्रकार हैः–

1. स्थानांतरण तथा रिहायशी मकानों की कमी।
2. सामाजिक सुविधाओं का अभाव।
3. यातायात का उच्च घनत्व।
4. अपर्याप्त जलापुर्त्ति।
5. ऊर्जा की कमी।
6. पर्यावरणीय प्रदूषण।
7. बेरोजगारी एवं सामाजिक तनाव।
8. अपराधो की वृद्धि।
9. मलिन बस्तियों का विकास।
10. नगरीय अपशिष्ट।

आर्थिक उदारीकरण के कारण भारत के नगरीय क्षेत्रों में संरचनात्मक परिवर्तन हो रहे है। और नए आर्थिक प्रतिरूप विकसित हो रहे है।

संदर्भ सूची

1. चान्दना, आर.सी – जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, लुधियाना।
2. दूबे एवं सिंह– जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. कौशिक, गर्ग– संसाधन एवं पर्यावरण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, 2000।
4. नेगी, पी.एस– पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2004।
5. सक्सेना, हरिमोहन– पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2002।